रामपाल का वाणीघात।।

> हरियाणा के एक कथित संत हंसमुनि दूत रामपाल जी है जिन्होने परमआदरणीय श्री गरीबदास जी महाराज कि वाणी मे ढेर सारी मिलावटें एवं फेर बदल किया है।

> इस पुस्तिका मे इनकि इन्ही मिलावटों का पर्दाफाश किया जाऐगा।

> हंसमुनि कालदूत रामपाल जी अपने सत्संगों मे बताते हैं कि गरीबदास जी कि वाणी बिलकुल यथार्थ वाणी है और गरीबदास दास जी का ग्रंथ भी एकदम सही है।

> पर ये कहने के बावजूद भी रामपाल जी ने गरीबदास जी कि वाणी मे ढेरों मिलावटें कर डाली और भोली जनता को गुमराह किया।

> रामपाल जी अपने सत्संगो मे एक बार कहा था कि एक गरीबदास पंथ के किसी संत ने गरीबदास जी कि वाणी मे मिलावट करने कि कोशिश कि थी तो उसको अधरंग मार गया।

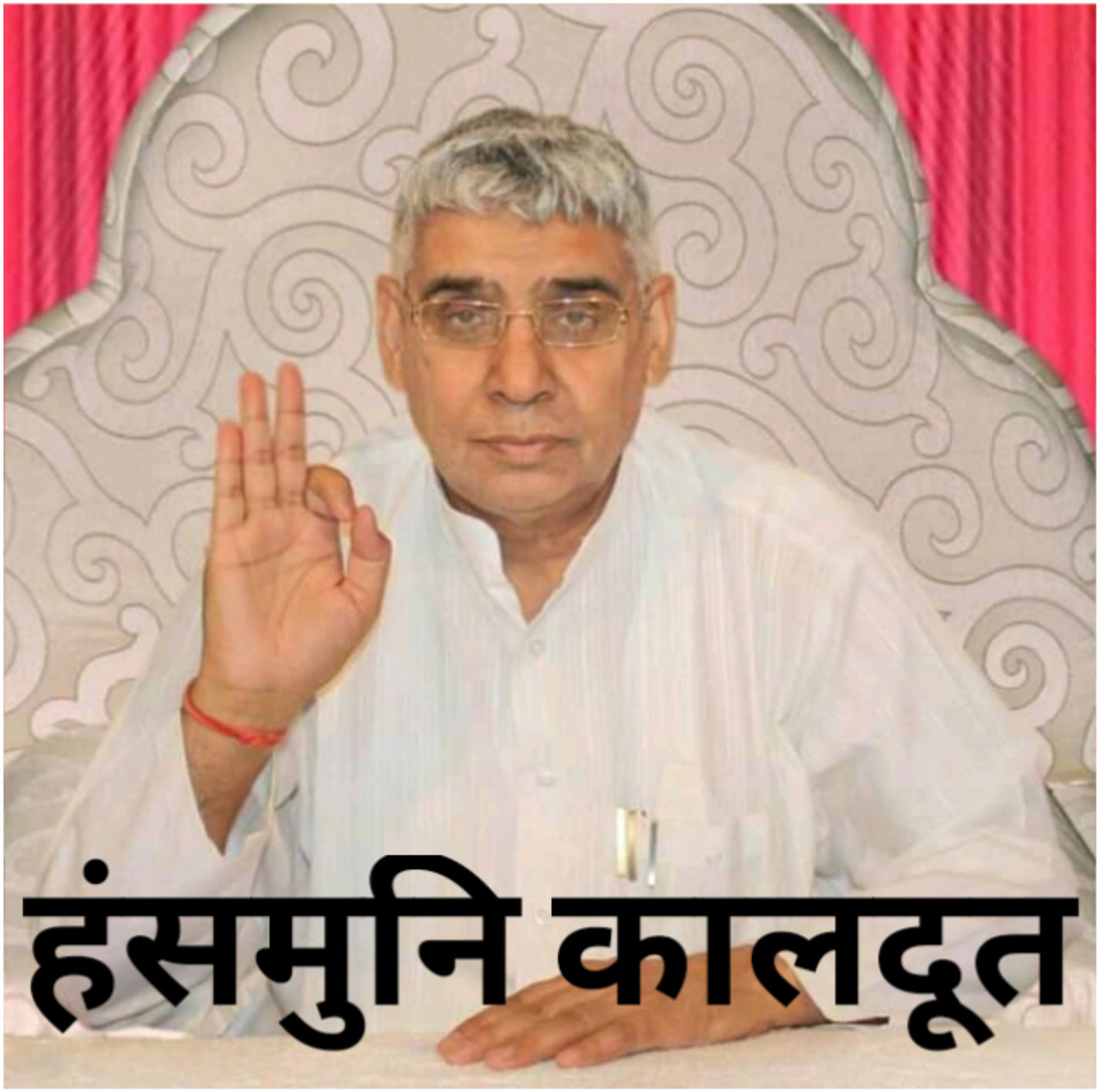

> पर ये सब जानने के बाद भी रामपाल जी ने गरीबदास जी कि वाणी मे मिलावट करने का दु:साहस किया और इसकि कीमत भी उन्हे चुकानी पड़ी मालिक ने इस किऐ कि सजा दी और आज परिणामस्वरूप वो जेल मे है और अब आखिरी स्वांस तक वहीं रहेगा।

> तो आईये हम देखते हैं इनके द्वारा गरीबदास जी कि वाणी मे कि गई मिलावटें।

नोट:- हम ऊपर कि तरफ रामपाल जी कि पुस्तक "भक्ति बोध" कि तस्वीर दिखाऐंगे जिस पुस्तक मे इन्होने गरीबदास जी कि वाणी ली है और उसमे ढेरों मिलावटें कि है, गौरतलब है कि रामपाल जी के सभी शिष्य रोज सुबह शाम इस पुस्तक कि वाणी पढ़ते हैं। और नीचे कि तरफ गरीबदास जी के सदग्रंथ से यथार्थ वाणी दिखाऐंगे।

कविर्देवाय नमः

सतगुरु देवाय नमः
कबीर परमेश्वर की दया

आदरणीय गरीबदास जी साहेब की वाणी

।।अथ मंगलाचरण।।

गरीब नमो नमो सत् पुरूष कुं, नमस्कार गुरु कीन्ही।
सुरनर मुनिजन साधवा, संतों सर्वस दीन्ही।1।
सतगुरु साहिब संत सब डण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछै मध्य हुए, तिन कुं जा कुरबान।2।
नराकार निरविषं, काल जाल भय भंजनं।
निर्लेपं निज निर्गुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुनं।3।
सोहं सुरति समापतं, सकल समाना निरति लै। उजल हिरंबर हरदमं बे परवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।4।
गरीब जो सुमिरत सिद्ध होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।5।

ॐ

सत साहिब अविगत कबीर। सत सुकृत नाम कबीर।।

अथ गुसांई **गरीबदास** साहिब जी की अमृतमयी वाणी

मंगलाचरण

गरीब, नमो नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ही।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरबस दीन्ह ही।।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुरबान।।
निराकार निरबिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निरगुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुनि।।
सोहं सुरति समापतं, सकल समाना निरति लै।
उजल हिरम्बर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।।
अनाहद मंत्र, सुख सलाहद मंत्र, अजोख मंत्र।
बेसुन्न मंत्र, निरबान मंत्र थीर है।।
आदि मंत्र. जगादि मंत्र. अचल अभंगी मंत्र।

> उपरोक्त 👆 तस्वीरों मे आप सभी विवेकी जन साफ साफ देख सकते हैं कि किस प्रकार हंसमुनि कालदूत रामपाल जी ने गरीबदास जी कि मंगलाचरण कि वाणी मे "निराकार" कि जगह "नराकार" लिख दिया और मूलवाणी मे मिलावट कर दी।

> ये मिलावट इन्होने इसलिऐ कि क्युं कि ये परमात्मा को नराकार यानी मनुष्य के जैसे आकार वाला समझते हैं यानी परमात्मा को केवल देहस्वरुप मानते हैं जो कि महा अज्ञान है।

> यथार्थ मे दोस्तों वो परमात्मा साकार एवं निराकार दोनों से परे शब्दस्वरुप है।

> गरीबदास जी ने परमात्मा को निराकार भी इसलिऐ बोला है ताकि रामपाल जैसे संसार के कम विवेकी लोगों का का स्तर उपर उठ सके जो परमात्मा को साकार स्वरुप समझ बैठे हैं।

>कबीर साहिब इस संसार मे अपने तेजपुंज कि देह कि पूजा करवाने नही आते बल्कि हमे हमारे शब्द स्वरुप का बोध करवाने आते हैं।

गैबी गुलजार मन्त्र, निर्भय निरधार मन्त्र, सुमरत सुकृत मन्त्र अगमी अबंच मन्त्र अदलि मन्त्र अलेख है।4।
फजलं फराक मन्त्र, बिन रसना गुणलाप मन्त्र, झिलमिल जहूर मन्त्र, सरबंग भरपूर मन्त्र, सैलान मन्त्रसार है।।5।।
ररंकार गरक मन्त्र, तेजपुंज परख मन्त्र, अदली अबन्ध मन्त्र, अजपानिर्सन्ध-मन्त्र,अबिगतअनाहदमन्त्र,दिलमेंदीदारहै।।6।।
वाणी विनोद मन्त्र, आनन्द असोध मन्त्र, खुरसी करार मन्त्र, अनभय उच्चार मन्त्र, उजल मन्त्र अलेख है।।7।।
साहिब सत्राम मन्त्र, सांई निहकाम मन्त्र, पारख प्रकास मन्त्र, हिरम्बरहुलासमन्त्र,मौलेमलारमन्त्र,पलकबीचखलकहै।।8।।

।।अथ गुरुदेव का अंग।।

गरीब, प्रपटन वह प्रलोक है, जहां अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत सैं उतरे, पाया हम दीदार।।1।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलल पंख की जात।
काया माया ना वहां, नहीं पाँच तत का गात।।2।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या,उजल हिरम्बर आदि।
भलका ज्ञान कमान का, घालत हैं सर सांधि।।3।।

अथ गुरुदेव का अंग

गरीब, प्रपट्टन परलोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत से ऊतरे, पाया हम दीदार।। १।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अललपंख की जात।
काया माया ना उहां, नहीं पिंड नहीं गात।। २।।

अवतार स्थान श्री रामपुर धाम

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप रामपाल कि गरीबदास वाणी मे कि दूसरी मिलावट देख सकते हैं मूलवाणी मे लिखा हुआ है "नहीं पिंड नही गात" जबकि रामपाल ने उसके स्थान पर लिख दिया "नही पांच तत्व का गात"

> परमात्मा को देहस्वरुप या मनुष्यसदृष्य समझना एक मूर्खता है, क्युं कि परमात्मा साकार निराकार से परे शब्द स्वरुप है।

> वो परमात्मा अपने अविगत शब्द स्वरुप से इस संसार मे एक तेजपुंज का बनावटी शरीर धारण कर के आता है हम जीवों को चेताने के लिऐ।

गरीब, गैबी ख्याल विशाल सतगुरु
अचल दिगंबर थीर हैं।
भक्ति हेत काया धर आऐ अविगत सत
. . . कबीर हैं।।

गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
पीताम्बर ताखी धर्‌यो, बानी शब्द रिसाल।।12।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
गवन किया परलोक से, अलल पंख की चाल।।13।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
ज्ञान जोग और भक्ति सब, दीन्ही नजर निहाल।।14।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बेप्रवाह अबंध।
परम हंस पूर्ण पुरूष, रोम - रोम रवि चंद।।15।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिंदा जगदीश।
सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकुट है शीश।।16।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूं , मधुरे बैन विनोद।
चार बेद षट शास्त्र, कह अठारा बोध।।17।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूं, अचल विहंगम चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान शब्द सर घाल।।18।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तुरिया केरे तीर।
भगल विद्या बानी कहैं, छानै नीर अरु खीर।।19।।

ज्ञान जोग अरु भक्ति सब, दीन्हीं नजर निहाल।। १४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बेपरवाह अबंध।
परमहंस पूर्ण पुरुष, रोम रोम रविचन्द।। १५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिन्दा जगदीश।
सुंन विदेशी मिल गया, छत्र मुकट है शीश।। १६।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, मधुरे बैन विनोद।
चार वेद षट् शास्त्र, कहां अठारा बोध।। १७।।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, अचल विहंगम चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान शब्द सर घाल।। १८।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तुरिया केरे तीर।
भगल बिद्या बानी कहै, छानै नीर अरु छीर।। १९।।
गरीब, जिन्दा जोगी जगतगुरु, मालिक मुरशद पीव।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि गरीबदास जी कि मूलवाणी मे लिखा है "कहां अठारह बोध" जबकि रामपाल जी ने मिलावट करके लिख दिया "कह अठारह बोध"

> रामपाल जी कि चालाकि को आप आसानी से पकड़ सकते हैं, रामपाल जी ने "कहां" कि जगह "कह" इसलिऐ लिख दिया क्युं कि इनके अनुसार सतगुरु वो है जो चार वेद शास्त्र आदि से ज्ञान बताऐ,

> जबकि मूलवाणी मे स्पष्ट लिखा है कि सतगुरु को इन चार वेद पोथियों कि कोई आवश्यकता नही होती उस सतगुरु के सामने इन पोथियों कि कोई औकात नही होती यही गरीबदास जी इस मूलवाणी मे कह रहे हैं।

> अपने सत्संगो मे भी रामपाल जी इस वाणी मे "कहां" कि जगह "कह" ही पढ़ते हैं और अपने सत्संग मे इस वाणी कि उल्टी व्याख्या कर देते हैं।

गरीब, जिंदा जोगी जगत गुरु, मालिक मुरशद पीव।
काल कर्म लागै नहीं, नहीं शंका नहीं सीव।।20।।
गरीब, जिंदा जोगी जगत गुरु, मालिक मुरसद पीर।
दहुँ दीन झगड़ा मॅड्या, पाया नहीं शरीर।।21।।
गरीब, जिंदा जोगी जगत गुरु, मालिक मुरशद पीर।
मार्या भलका भेद से, लगे ज्ञान के तीर।22।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज के अंग।
झिल मिल नूर जहूर है, नर रूप सेत रंग।।23।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज की लोय।
तन मन अरपूं सीस कुं, होनी होय सु होय।।24।।

काल कर्म लागै नहीं, नहीं शंका नहीं सीव।। २०।।
गरीब, जिन्दा जोगी जगतगुरु, मालिक मुरशद पीर।
दहूँ दीन झगरा मंड्या, पाया नहीं शरीर।। २१।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मालिक मुरशद पीर।
मार्या भलका भेद से, लगे ज्ञान के तीर।। २२।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज के अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहीं रंग।। २३।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज की लोय।
तन मन अरपौं शीश कूँ, होनी होय सो होय।। २४।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर किवार।
अगम द्वीप कूँ ले गया, जहां ब्रह्म दरबार।। २५।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर कपाट।
अगम भूमि कूँ गम करी, उतरे औघट घाट।। २६।।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि गरीबदास जी कि मूलवाणी मे लिखा है "रुप रेख नही रंग" जबकि रामपाल ने लिख दिया "नर रुप सेत रंग"

> इस वाणी मे गरीबदास जी ने स्पष्ट कह रखा है कि उस आत्मशब्द यानी उस शब्दगुरु का कोई रुप रेख रंग नही है, पर रामपाल ने मिलावट कि क्युं इनके अनुसार परमात्मा का मनुष्य जैसा रंग रुप है।

भक्ति बोध

।।अथ सर्व लक्षणा ग्रन्थ।।

गरीब उत्तम कुल कर्तार दे, द्वादस भूषण संग।
रूप द्रव्य दे दया कर, ज्ञान भजन सत्संग।1।
सील संतोष विवेक दे, क्षमा दया इकतार।
भाव भक्ति वैराग दे, नाम निरालम्भ सार।2।
जोग युक्ति स्वास्थ्य जगदीश दे, सुक्ष्म ध्यान दयाल।
अकल अकीन अजन्म जति,अठसिद्धि नौनिधि ख्याल।3।
स्वर्ग नरक बांचै नहीं, मोक्ष बन्धन सैं दूर।
बड़ी गरीबी जगत में, संत चरण रज धूर।4।

अथ सर्व लक्षणा ग्रन्थ

उत्तम कुल कर्तार दे, द्वादश भूषण संग।
रूप द्रव्य दे दया करि, ज्ञान भजन सत्संग।। १।।
शील संतोष विवेक दे, क्षमा दया एकतार।
भाव भक्ति बैराग दे, नाम निरालम्ब सार।। २।
योग युक्ति जगदीश दे, सूक्ष्म ध्यान दयाल।
अकलि अकीन अजन्म जति,
अष्ट सिद्धि नौ निधि ख्याल।। ३।
स्वर्ग नरक बांचै नहीं, मोक्ष बंधन से दूर।
बड़ी गरीबी जगत में, संत चरण रज धूर।। ४।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि गरीबदास जी कि मूलवाणी मे लिखा है कि "योग युक्ति जगदीश दे" जबकि रामपाल ने मनमुखी रुप से मिलावट करके इसमे "स्वास्थ्य" शब्द अतिरिक्त जोड़ दिया और लिख दिया "योग युक्ति स्वास्थ्य जगदीश दे"

गगन मण्डल की सैल कर ले, बहुरि न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ, भौ सागर नहीं आव है।16।
कन्द्रप जीत उदीत जोगी, षट करमी यौह खेल है।
अनभै मालनि हार गूदें, सुरति निरति का मेल है।17।
सोहं जाप अजाप थरपो, त्रिकुटी संयम धुनि लगै।
मान सरोवर न्हान हंसा, गंग् सहंस मुख जित बगै।18।
कालइंद्री कुरबान कादर, अबिगत मूरति खूब है।
छत्र स्वेत विशाल लोचन, गलताना महबूब है।19।
दिल अन्दर दीदार दर्शन, बाहर अन्त न जाइये।
काया माया कहां बपुरी, तन मन शीश चढाइये।20।
अबिगत आदि जुगादि जोगी, सत पुरुष ल्यौलीन है।
गगन मंडल गलतान गैबी, जात अजात बेदीन है।21।
सुखसागर रतनागर निर्भय, निज मुखबानी गावहीं।
झिन आकर अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवहीं।22।
झिल मिल नूर जहूर जोति, कोटि पद्म उजियार है।

सं
मारसरोवर न्हान हंसा, गंग सहंस मुख जित बगै।। १८।।
कालंद्री कुरबान कादर, अविगत मूरति खूब है।
छत्र श्वेत विशाल लोयन, गलताना महबूब है।। १९।।
दिल अंदर दीदार दर्शन, बाहिर अंत न जाईये।
काया माया कहां बपरी, तन मन शीश चढ़ाईये।। २०।
अविगत आदि जुगादि योगी, सत्य पुरुष ल्यौलीन है।
गगनि मंडल गलतान गैबी, जाति अजाति बेदीन है।। २१।।
सुखसागर रतनागर निर्भय, बिन मुख बानी गावही।
बिन अकार अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवही।। २२।
झिलमिल नूर जहूर जोती, कोटि पदम उजियार है।
उलटै नैंन बेसुंनि विस्तर, जहां तहां दीदार है।। २३।।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप स्पष्ट देख सकते हैं कि गरीबदास जी कि मूलवाणी मे लिखा है "बिन मुख बानी" जबकि रामपाल ने मिलावट करके लिख दिया "निज मुख बानी"

> साथ साथ ही साथ दो और मिलावटें भी है, गरीबदास जी ने मूलवाणी मे कह है "बिन आकार" जबकि रामपाल ने मिलावट करके लिख दिया "झिन आकर"

> ये मिलावट भी इसलिए कि है क्युं कि ये परमात्मा को देहस्वरुप मानते हैं विदेहसेवरुप नही।

भक्ति बोध

सुन्न मंडल सतलोक चलिये, नौ दर मुंद बिसुन्न है।
दिव्य चिसम्यों एक बिम्ब देख्या, निज श्रवण सुनिधुनि है।25।
चरण कमल में हंस रहते, बहुरंगी बरियाम हैं।
सूक्ष्म मूरति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम हैं।26।
नौ सुर बन्ध निसंक खेलो, दसमें दर मुखमूल है।
माली न कुप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।26।

उलटै नैंन बेसुंनि विस्तर, जहां तहां दीदार है।। २३।
अष्ट कँवल दल सकल रमता, त्रिकुटी कँवल मध्य निरख हीं।
श्वेत धुजा शुन्य गुमट आगे, पंच रंग झंडे फरक हीं।। २४।
शुन्य मंडल सत्य लोक चलिये, नौदर मूंद बेसुंनि है।
बिन चिशम्यौं एक बिंब देख्या, बिन श्रवन सुनि धुंन है।। २५।
चरण कंवल में हंस रहते, बौहरंगी बरियाम है।
सूक्ष्म मूरति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम है।। २६।
नौ स्वर बंधि निशंक खेलो, दसमें दर मुख मूल है।
माली न कूप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।। २७।
स्वास उसास पवन कूँ पलटै, नाग फूनी कूँ भूंच है।

गरीबदास ग्रंथ साहिब

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप रामपाल कि मिलावट को देख सकते हैं, मूलवाणी मे "बिन चिसम्यौं" लिखा है और इन्होनें "दिव्य चिसम्यों" लिख दिया और मूलवाणी मे "बिन श्रवण" लिखा है और इन्होने "निज श्रवण" लिख दिया।

भक्ति बोध37

सनकादिक और सिद्ध चौरासी, ध्यान धरत हैं तास का।
चौबीसौं अवतार जपत हैं, परम हंस प्रकास का।34।
सहंस अठासी और तैतीसों, सूरज चन्द चिराग हैं।
धर अम्बर धरनी धर रटते, अबिगत अचल बिहाग हैं।35।
सुर नर मुनिजन सिद्ध और साधिक, पार ब्रह्म कूं रटत हैं।
घर घर मंगलाचार चौरी, ज्ञान जोग जहाँ बटत हैं।36।
चित्र गुप्त धर्म राय गावैं, आदि माया ओंकार है।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, ऐसा पारब्रह्म दरबार है।37।
कामधेनु कल्पवृक्ष जाकैं, इन्द्र अनन्त सुर भरत हैं।

धर अंबर धरनी धर रटते, अविगत अचल विहाग हैं।। ३५।
सुरनर मुनिजन सिद्ध और साधक, पारब्रह्म कूँ रटत हैं।
घर घर मंगलचार चौरी, ज्ञान योग जहां बटत हैं।। ३६।
चित्र गुप्त धर्मराय गावैं, आदि माया ऊँकार है।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, ऐसा ब्रह्म दरबार है।। ३७।
कामधेनु कल्पवृक्ष जाकै, इन्द्र अनंत सुर भरत हैं।
पार्वती कर जोर लक्ष्मी, सावित्री शोभा करत हैं।। ३८।।

गरीबदास ग्रंथ साहिब

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि मूलवाणी मे "ब्रम्ह" लिखा है जबकि रामपाल ने मिलावट करके "पारब्रम्ह" लिख दिया।

छान छिवाई गऊ जिवाई, गनिका चढी बिमान में।
सदना बकरे कुं मत मारै, पहुँचे आन निदान में।44।
अजामेल से अधम उधारे, पतित पावन बिरद तास है।
केशो आन भया बनजारा, षट दल कीनी हास है।44।
धना भक्त का खेत निपाया, माधो दई सिकलात है
पण्डा पांव बुझाया सतगुरु, जगन्नाथ की बात है।45।
भक्ति हेतु केशो बनजारा, संग रैदास कमाल थे।
हे हर हे हर होती आई, गून छई और पाल थे।46।
गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर हैं।
भक्ति हेत आन काया धर आये,अबिगत सतकबीर हैं।47।
नानक दादू अगम अगाधू, तेरी जहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।48।
कोटि भानु प्रकाश पूरण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी है सतसंगी, अबिगत का दीदार है।49।
धन सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेटहीं।
तेज पुञ्ज आन देह धर कर, इस विधि हम कुं भेंट हीं।50।
शब्द निवास आकाशवाणी, योह सतगुरु का रूप है।

गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगंबर थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये, अविगत सत्य कबीर है।। ४७।।
नानक दादू अगम अगाधू, तिरी जिहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।। ४८।
कोटि भानु प्रकाश पूर्ण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी हैं सति संगी, अविगत का दीदार है।। ४९।।
धन्य सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेट हीं।
तेज पुंज तन देह धरि करि, इस विधि हम कूँ भेट हीं।। ५०।।
शब्द निवास अकाश वाणी, यौह सतगुरु का रूप है।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि मूलवाणी मे 47(४७) नंबर साखी मे लिखा है "भक्ति हेत काया धर आऐ" इसमे "आन" नही लिखा है जबकि रामपाल जी ने मिलावट करते हुऐ इसमे "आन" अतिरिक्त रुप से जोड़ दिया

> और मनमुखी रुप से 47 नंबर साखी मे लिख दिया "भक्ति हेत आन काया धर आऐ"

> तथा 50(५०) नंबर साखी मे मूलवाणी मे लिखा है "तन देह धर" जबकि रामपाल ने इसमे भी मिलावट करके 50 नंबर साखी मे लिख दिया "आन देह धर"

> ये मिलावट रामपाल ने इसलिए कि क्युं कि इनके मुताबिक परमात्मा सतलोक में सिंहासन पर सशरीर विराजमान है और वो वहां से आन यानी अन्य हल्के तेजपुंज के शरीर को लेकर संसार मे आता है।

> जबकि मूलवाणी साफ साफ कह रही है कि उस परमात्मा कि कोई देह नही है वो विदेह है शब्दरुप है और इस संसार मे वो एक बनावटी तेजपुंज का शरीर धर के आता है जीवों को चेताने के लिऐ।

पांच तत्त की गुदरी बनाई, चन्द सूर दो थिगरी लगाई।3।
कोटि जतन कर मुकुट बनाया, बिच बिच हीरा लाल लगाया।4।
आपै सीवैं आपे बनावैं, प्राण पुरूष कुं ले पहरावैं।5।
कहै कबीर सोई जन मेरा, नीर खीर का करै निबेरा।6।

(5)

राम निरंजन आरती तेरी, अबिगत गति कुछ समझ पड़े नहीं, क्यूं पहुंचे मति मेरी।1।
नराकार निर्लेप निरंजन, गुणह अतीत तिहूं देवा।
ज्ञान ध्यान से रहैं निराला, जानी जाय न सेवा।2।

राम निरंजन आरती तेरी।
अवगति गति कुछ समझ पड़ै नहीं, क्यूँ पहुंचै मति मेरी।। टेक।।
निराकार निरलेप निरंजन, गुण अतीत तिहुँ देवा।
ग्यान ध्यान से रहै निराला, जानी जाय न सेवा।। १।।
सनक सनंदन नारद मुनि जन, शेष पार नहीं पावै।
शंकर ध्यान धरै निस वासर, अजहूँ ताहि झुलावै।। २।।
सब सुमरैं अपने अनुमाना, तो गति लखी न जाई।
कहै कबीर कृपा कर जन पर, ज्यों है त्यों समझाई।। ३।। ५।।
नूर की आरती नूर के छाजे, नूर के ताल पखावज बाजे।। टेक।।

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि "संध्या आरती" कि इस मूलवाणी मे "निराकार" लिखा है और रामपाल ने एक बार फिर से मिलावट करते हुई "नराकार" लिख दिया।

संध्या सो जो सन्धि पिछानै, मन पसरे कुं घट में आनै।9।
सो संध्या हमरे मन मानी, कहैं कबीर सुनो रे ज्ञानी।10।

(2)

ऐसी आरती त्रिभुवन तारे, तेजपुञ्ज जहां प्राण उधारे।1।
पाती पंच पौहप कर पूजा, देव निरंजन और न दूजा।2।
अनहद नाद पिण्ड ब्रह्मण्डा, बाजत अहर निस सदा अखण्डा।3।
गगन थाल जहां उड़गन मोती, चंद सूर जहां निर्मल जोती।4।
तनमन धन सब अर्पण कीन्हा, परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा।5।
प्रेम प्रकाश भया उजियारा, कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा।6।

(3)

संध्या आरती करो विचारी, काल दूत जम रहैं झख मारी।1।
लाग्या सुषमण कूंची तारा, अनहद शब्द उठै झनकारा।2।
उनमुनि संयम अगम घर जाई, अछै कमल में रहया समाई।3।
त्रिकुटी संजम कर ले दर्शन, देखत निरखत मन होय प्रसन्न।4।

तन मन धन सब अर्पन कीन्हा। परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा।। ४
प्रेम प्रकाश भया उजियारा। कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा।। ५।। २
संध्या आरती करो विचारी। काल दूत जम रहै झख मारी।। टेक।
लाग्या सुषमण कूंची तारा। अनहद शब्द उठै झनकारा।। १।।
उनमनि संजम अगम घर जाई। अछै कँवल में रह्या समाई।। २।
त्रिकूटी संजम कर ले दरसन। देखन निरखत मन होय प्रसन।। ३।

गरीबदास ग्रंथ साहिब

> उपरोक्त 👆 तस्वीर मे आप देख सकते हैं कि मूलवाणी मे "उनमुनि संजम" लिखा है पर रामपाल ने मिलावट करके "उनमुनि संयम" लिख दिया।

> अब आप सभी देख ही सकते हैं कि हंसमुनि कालदूत रामपाल जी ने गरीबदास जी महाराज कि अनमोल वाणी मे कितनी मिलावट कर रखी है।

> अपने सत्संगो मे भी रामपाल जी यही मिलावटी वाणी पढ़ते हैं जैसे निराकार कि जगह नराकार बोल देते हैं।

> आपकि जानकारी के लिए ये बता दें कि ये सारी मिलावटें रामपाल द्वारा सन् 2004 के बाद कि गई हैं उससे पहले रामपाल इन वाणीयों को सही पढ़ता था,

> प्रमाण के लिऐ आप रामपाल कि नित नियम और संध्या आरती कि ऑडियो सुन सकते हैं जो 2002 से 2004 के बीच मे ही बनी हैं।

> अपनी इसी मिलावटखोरी के कारण रामपाल को आज जेल कि हवा खानी पड़ रही है क्युं कि जो भी गरीबदास जी कि वाणी मे मिलावट करता है उसकि हालत खराब होनी ही है उसकि बुद्धी का भ्रष्ट होना तय है।

> बुद्धी भ्रष्ट होने के कारण और अहंकार वश ही रामपाल 42 बार कोर्ट मे पेश नही हुआ फलस्वरुप कोर्ट ने इसे अरेस्ट करने का हुक्म दिया पर फिर भी ये पेश नही हुआ तो पुलिस को मजबुरन इसके खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ी।

> पर इसने भी देशद्रोह करने मे कसर नही छोड़ी आखिरकार ये पकड़ा गया पर इस पूरी कार्रवाई मे 6 लोगों कि मृत्यु हुई।

> फिर कोर्ट ने 11 अक्टुबर 2018 को 6 हत्याओं के मामले मे इसे आखिरी स्वांस तक उम्रकैद कि सजा सुनाई और 12वें पंथ का अंत भी हो गया।

> इसलिऐ सभी भगत समाज से कहना चाहुंगा कि इस मिलावट खोर हंसमुनि कालदूत रामपाल को पहचानें और कबीर साहिब के वास्तविक मूलज्ञान को समझने के लिए यु ट्युब पर "कहत कबीर सुनो भई साधो" चैनल को सर्च करके देखें।

साहिब बंदगी

सतनाम।।